पाठ 4 लड़के और लड़कियों के रूप में बड़ा होना

www.evidyarthi.in

https://www.evidyarthi.in/

कक्षा VII पाठ 4 लड़के और लड़कियों के रूप में बड़ा होना (NCERT)

www.evidyarthi.in

परिचय

1920 के दशक में सामोआ द्वीप में बच्चो का बड़ा होना

1960 के दशक में मध्य-प्रदेश में पुरुष के रूप में बड़ा होना

घरेलू काम का मूल्य

घर पर कार्य करने वालों का जीवन

महिलाओं का काम और समानता

https://www.evidyarthi.in/

परिचय

www.evidyarthi.in

- लड़का या लड़की होना किसी की भी एक महत्वपूर्ण पहचान है, उसकी अस्मिता है। हम जिस समाज में पले-बढ़े हैं, वह हमें सिखाता है कि

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

लड़कियों और लड़कों का कैसा व्यवहार स्वीकार्य करने योग्य है, उन्हें क्या करना चाहिए और क्या नहीं।

- हम अक्सर यह सोचकर बड़े होते हैं कि ये चीजें हर जगह

https://www.evidyarthi.in/

कक्षा VII पाठ 4 लड़के और लड़कियों के रूप में बड़ा होना (NCERT)

www.evidyarthi.in

कक्षा VII पाठ 4 लड़के और लड़कियों के रूप में बड़ा होना (NCERT)

www.evidyarthi.in

बिल्कुल एक जैसी होती हैं। लेकिन क्या **सभी समाज** लड़के और लड़कियों को **एक ही नज़र** से देखते हैं?

- हम यह भी देखेंगे कि लड़कों और लड़कियों को दी जाने वाली अलग-अलग

https://www.evidyarthi.in/

कक्षा VII पाठ 4 लड़के और लड़कियों के रूप में बड़ा होना (NCERT)

www.evidyarthi.in

https://www.evidyarthi.in/

भूमिका उन्हें कैसे भविष्य में स्त्री और पुरुष की भूमिका के लिए तैयार करती है।

- यह अध्याय इस बात की भी जांच करेगा कि कार्य के

www.evidyarthi.in

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

क्षेत्र में पुरुषों और महिलाओं के बीच असमानता कैसे उभरती है।

- उन्हें पुरुषों और महिलाओं के रूप में उनकी भविष्य की **भूमिकाओं** के लिए तैयार करें।

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

- हम सीखेंगे कि अधिकांश समाज पुरुषों और महिलाओं को अलग-अलग महत्व देते हैं। महिलाएं जो भूमिकाएं निभाती हैं और जो काम करती हैं, उन्हें आमतौर पर कम महत्व दिया जाता है।

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

1920 के दशक में सामोआ द्वीप में बच्चो का बड़ा

- सामोआ द्वीप प्रशांत महासागर के दक्षिणी भाग में स्थित छोटे-छोटे द्वीपों के समूह का ही एक हिस्सा हैं।
- समोअन समाज पर किये

सामोआ द्वीप

www.evidyarthi.in

https://www.evidyarthi.in/

गए शोध के रिपोर्टों के अनुसार,1920 के दशक में बच्चे स्कूल नहीं जाते थे।

- बड़े बच्चों को, अक्सर पाँच साल से कम उम्र के बच्चों की

www.evidyarthi.in

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

ज़िम्मेदारी संभाली पड़ती थी।

- जब एक लड़का नौ साल का हो जाता था, तब तक वह बड़े लड़कों के साथ मछली पकड़ने और नारियल लगाने

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

जैसे बाहरी काम सीखने लगता था।

- लड़कियों को छोटे बच्चों की देखभाल जारी रखनी पड़ती थी या किशोरावस्था तक वयस्कों के लिए काम करना पड़ता था।

https://www.evidyarthi.in/

कक्षा VII पाठ 4 लड़के और लड़कियों के रूप में बड़ा होना (NCERT)

https://www.evidyarthi.in/

मछली पकड़ना

www.evidyarthi.in

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

- लगभग चौदह साल की उम्र के बाद, लड़कियां भी मछली पकड़ने जाती थी, बागान में काम करती थी,और टोकरियाँ बुनना सीखती थीं

https://www.evidyarthi.in/

कक्षा VII पाठ 4 लड़के और लड़कियों के रूप में बड़ा होना (NCERT)

www.evidyarthi.in

www.evidyarthi.in

कक्षा VII पाठ 4 लड़के और लड़कियों के रूप में बड़ा होना (NCERT)

www.evidyarthi.in

www.evidyarthi.in

www.evidyarthi.in

1960 के दशक में मध्य-प्रदेश में पुरुष के रूप में बड़ा

- छठी कक्षा में आने के बाद से, लड़के और लड़कियां अलग-अलग स्कूलों में जाते थे।
- बालिका विद्यालय में एक केंद्रीय प्रांगण था जहाँ वे

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

लड़कियों का स्कूल

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

आंगन

https://www.evidyarthi.in/

कक्षा VII पाठ 4 लड़के और लड़कियों के रूप में बड़ा होना (NCERT)

https://www.evidyarthi.in/

फुटबाल का मैदान

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

बाहरी दुनिया से **एकांत और सुरक्षा में** खेलते थे। लड़कों के स्कूल में अलग से **बाड़े** नहीं थे।

- **लड़कों** ने सड़कों का इस्तेमाल **बेकार खड़े रहने, दौड़ने, खेलने,और**

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

साइकिल चलाने की करतबों को आजमाने के लिए करते थे।

- लड़कियां हमेशा समूहों में जाती थीं क्योंकि उन्हें छेड़े जाने या हमला होने का डर भी रहता था।

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

लड़के और लड़कियों में अंतर

- समाज कम उम्र से ही लड़कों और लड़कियों के बीच स्पष्ट अंतर करता है।

कक्षा VII पाठ 4 लड़के और लड़कियों के रूप में बड़ा होना (NCERT)

www.evidyarthi.in

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

- लड़कों को आमतौर पर खेलने के लिए कार दी जाती है और लड़कियों को गुड़िया दी जाती है।
- यह अंतर छोटी-छोटी और सबसे रोज़मर्रा की चीज़ों में पैदा होता है जैसे कि

https://www.evidyarthi.in/

कक्षा VII पाठ 4 लड़के और लड़कियों के रूप में बड़ा होना (NCERT)

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

- लड़कियों को कैसे कपड़े पहनने चाहिए, लड़कों को कौन से खेल खेलने चाहिए, लड़कियों को कैसे धीरे से बात करनी चाहिए या लड़कों को सख्त होना चाहिए।

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

- अधिकांश समाजों में, पुरुषों और महिलाओं की भूमिका या उनके द्वारा किए जाने वाले कार्यों को समान रूप से महत्व नहीं दिया जाता है।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/

“मेरी माँ काम नहीं करती”.......

https://www.evidyarthi.in/

कक्षा VII पाठ 4 लड़के और लड़कियों के रूप में बड़ा होना (NCERT)

www.evidyarthi.in
https://www.evidyarthi.in/

कक्षा VII पाठ 4 लड़के और लड़कियों के रूप में बड़ा होना (NCERT)

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

कक्षा VII पाठ 4 लड़के और लड़कियों के रूप में बड़ा होना (NCERT)

www.evidyarthi.in
https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

घरेलू काम का

- कई महिलाएं दफ्तरों में काम करती हैं और कई सिर्फ घर का काम करती हैं।
- गृहकार्य को महत्व देना एक महत्वपूर्ण तत्व है जिसे समाज में प्रचारित करने की आवश्यकता है।

https://www.evidyarthi.in/

ऑफिस का काम कर रही महिला

www.evidyarthi.in

https://www.evidyarthi.in/

कक्षा VII पाठ 4 लड़के और लड़कियों के रूप में बड़ा होना (NCERT)

www.evidyarthi.in

घर का काम

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

- अगर हम घरेलू कामगारों के जीवन को देखें, तो वे सफाई, खाना पकाने, कपड़े और बर्तन धोने या बच्चों की देखभाल करने जैसी गतिविधियों में शामिल होते हैं। इनमें ज्यादातर महिलाएं हैं।

www.evidyarthi.in

झाड़ू मारना

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

https://www.evidyarthi.in/

कपड़े धोना

www.evidyarthi.in
https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

www.evidyarthi.in

अपने बच्चों की देखभाल

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

- कई **गृहकार्य** में वास्तव में कई अलग-अलग कार्य शामिल होते हैं। काम के लिए **ज़ोरदार** और **शारीरिक श्रम** की आवश्यकता होती है।

https://www.evidyarthi.in/

घर पर कार्य करने वालों का

www.evidyarthi.in

एक घरेलू कामगार मेलानी को दिल्ली में काम करने के अपने अनुभव के बारे में कहना पड़ा - "मेरी पहली नौकरी एक अमीर परिवार में लगी थी। जो

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

तीन मंजिला घर में रहता था। मेमसाहब बहुत अजीब महिला थीं। जो हर काम करवाने के लिए चिल्लाती रहती थीं।

www.evidyarthi.in
घरेलू नौकर

www.evidyarthi.in
https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

मेरा काम रसोई का था। दूसरी दो लड़कियाँ सफाई का काम करती थीं। हमारा दिन सुबह 5 बजे शुरू होता। नाश्ते में हमें दो प्याला चाय और दो रूखी रोटियां मिलती थीं।

https://www.evidyarthi.in/

कक्षा VII पाठ 4 लड़के और लड़कियों के रूप में बड़ा होना (NCERT)

www.evidyarthi.in

https://www.evidyarthi.in/

रसोई का काम

www.evidyarthi.in

कक्षा VII पाठ 4 लड़के और लड़कियों के रूप में बड़ा होना (NCERT)

www.evidyarthi.in
evidyarthi
https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

हमें तीसरी रोटी कभी नहीं मिली। शाम के समय जब मैं खाना पकती थीं तो दोनों लड़कियां मुझसे एक और रोटी मांगतीं रहती थीं।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

मैं चुपके से उन्हें एक रोटी दे देती थीं और खुद भी एक रोटी ले लेती थीं। हमें दिन-भर का काम करने के बाद बहुत भूख लगती थी। हम घर में चप्पल नहीं पहन सकते थे।

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

ठंड के मौसम में हमारे पैर सूज जाते थे। मैं मेमसाहब से डरती थी, परन्तु मुझे गुस्सा भी आता और अपमानित भी महसूस करती थी।

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

"क्या हम दिन-भर काम नहीं करते थे? क्या हम कुछ **सम्मानजनक व्यवहार** के **योग्य** नहीं थे? वास्तव में, जिसे हम घरेलू काम कहते है, उसमें **अनेक कार्य** सम्मिलित रहते हैं।

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

इनमें से कुछ कामों में बहुत शारीरिक श्रम की आवश्यकता होती है।

ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में:

महिलाओं और लड़कियों को दूर-दूर से पानी लाना

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

पड़ता है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्रियों और लड़कियों को जलाऊ लकड़ी के भारी गट्ठर सिर पर ढोने पड़ते थे।

- कपड़े धोने, सफाई करने, झाड़ू लगाने और वजन उठाने जैसे कार्य करने के लिए झुकने

https://www.evidyarthi.in/

कक्षा VII पाठ 4 लड़के और लड़कियों के रूप में बड़ा होना (NCERT)

पानी लाना।

www.evidyarthi.in
https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

उठाने और ले जाने की आवश्यकता होती है।

- महिलाएं जो काम करती हैं वह कठिन और शारीरिक रूप से थकाने वाला काम होता है। इसमें बहुत समय भी लगता है।

कक्षा VII पाठ 4 लड़के और लड़कियों के रूप में बड़ा होना (NCERT)

www.evidyarthi.in

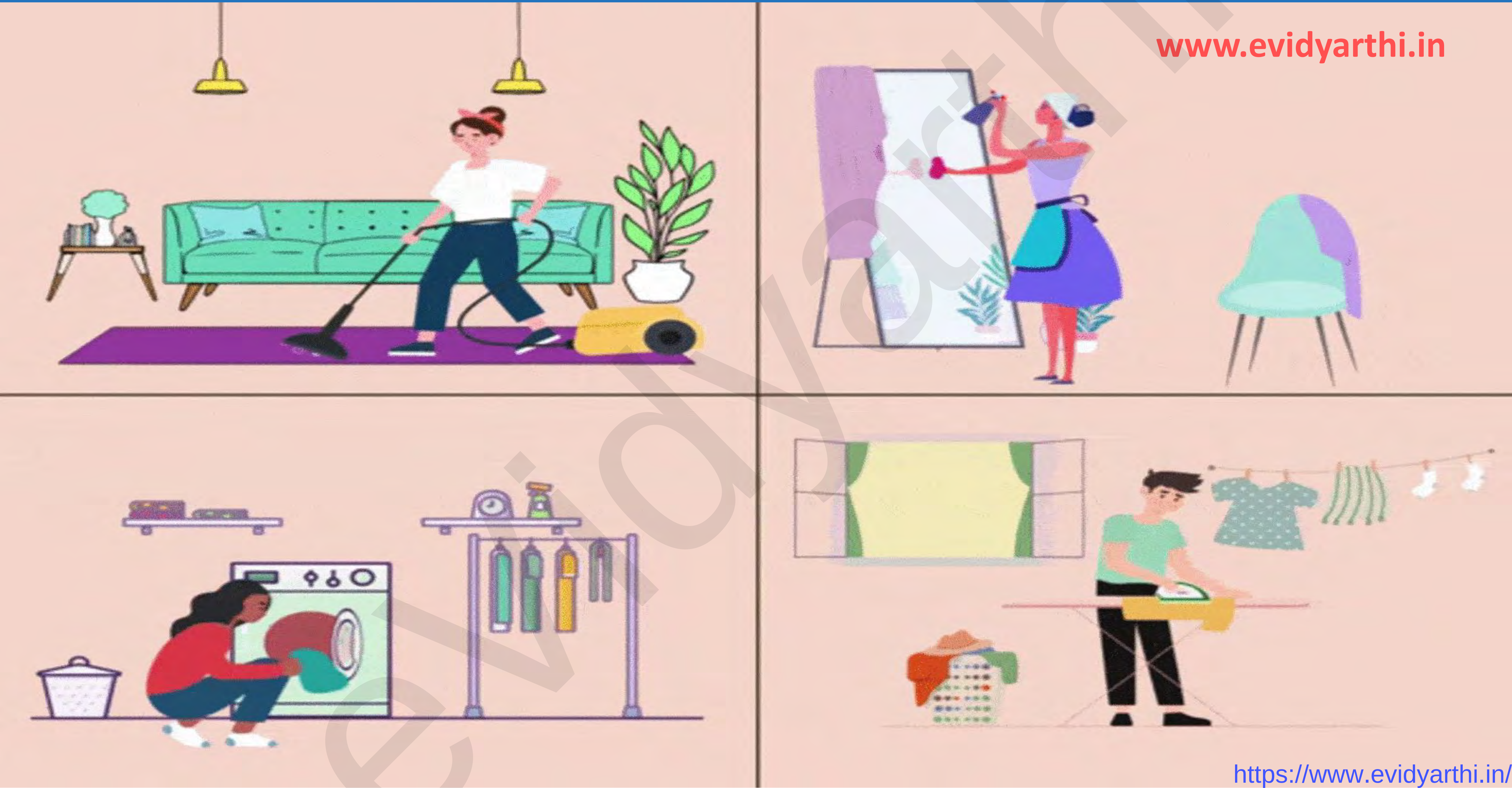

https://www.evidyarthi.in/

कठिन और शारीरिक रूप से थकाने वाला काम

www.evidyarthi.in

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

- यदि आप घर के काम और काम को जोड़ दें, जो महिलाएं घर के बाहर करती हैं, तो आप पाते हैं कि महिलाएं पुरुषों की तुलना में काम करने में अधिक समय व्यतीत

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

करती हैं और उनके पास अपने लिए बहुत कम समय होता है। सरकार ने देश के कई गांवों में आंगनवाड़ी या

https://www.evidyarthi.in/

घरेलू काम

www.evidyarthi.in

https://www.evidyarthi.in/

कक्षा VII पाठ 4 लड़के और लड़कियों के रूप में बड़ा होना (NCERT)

www.evidyarthi.in

कार्यालय का काम

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

बाल देखभाल केंद्र स्थापित किए हैं।

- सरकार ने ऐसे कानून पारित किए हैं, जिसके तहत यदि किसी संस्था में महिला कर्मचारियों

https://www.evidyarthi.in/

आंगनवाड़ी

www.evidyarthi.in

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

की संख्या 30 से अधिक है, तो उसे वैधानिक रूप से बालवाड़ी (क्रेच) की सुविधाएं प्रदान करनी होगी।

- क्रेच एक ऐसी सुविधा है जो माता-पिता को अपने

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

बच्चों को काम पर रहने के दौरान, छोड़ने में सक्षम बनाती है और जहां बच्चों को उनके समग्र विकास के लिए एक उत्तेजक वातावरण प्रदान किया जाता है।

https://www.evidyarthi.in/

कक्षा VII पाठ 4 लड़के और लड़कियों के रूप में बड़ा होना (NCERT)

क्रेच

www.evidyarthi.in

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

- परिवार के लिए, ये सभी काम बहुत कठिन होते हैं फिर भी महिलाएं इन्हें रोज करती हैं। वे शिकायत नहीं करते हैं या उनके चेहरे पर कोई दु:ख नहीं दिखाते हैं। महिलाओं का काम भी समय लेने वाला होता है।

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

उनके पास फुरसत के लिए ज्यादा समय नहीं होता है।

- आजकल बहुत सी महिलाएं घर के अंदर और बाहर दोनों जगह काम करती हैं। इसे

कक्षा VII पाठ 4 लड़के और लड़कियों के रूप में बड़ा होना (NCERT)

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

अक्सर **दोहरा बोझ** कहा जाता है। महिलाएं इस दोहरे बोझ को **बहुत कुशलता से** सहन करती हैं।

- **समानता** हमारे **संविधान** का एक

https://www.evidyarthi.in/

- महत्वपूर्ण सिद्धांत है जो कहता है कि पुरुष या महिला होना भेदभाव का कारण नहीं बनना चाहिए। लेकिन वास्तव में हम जो देखते हैं वह यह

www.evidyarthi.in

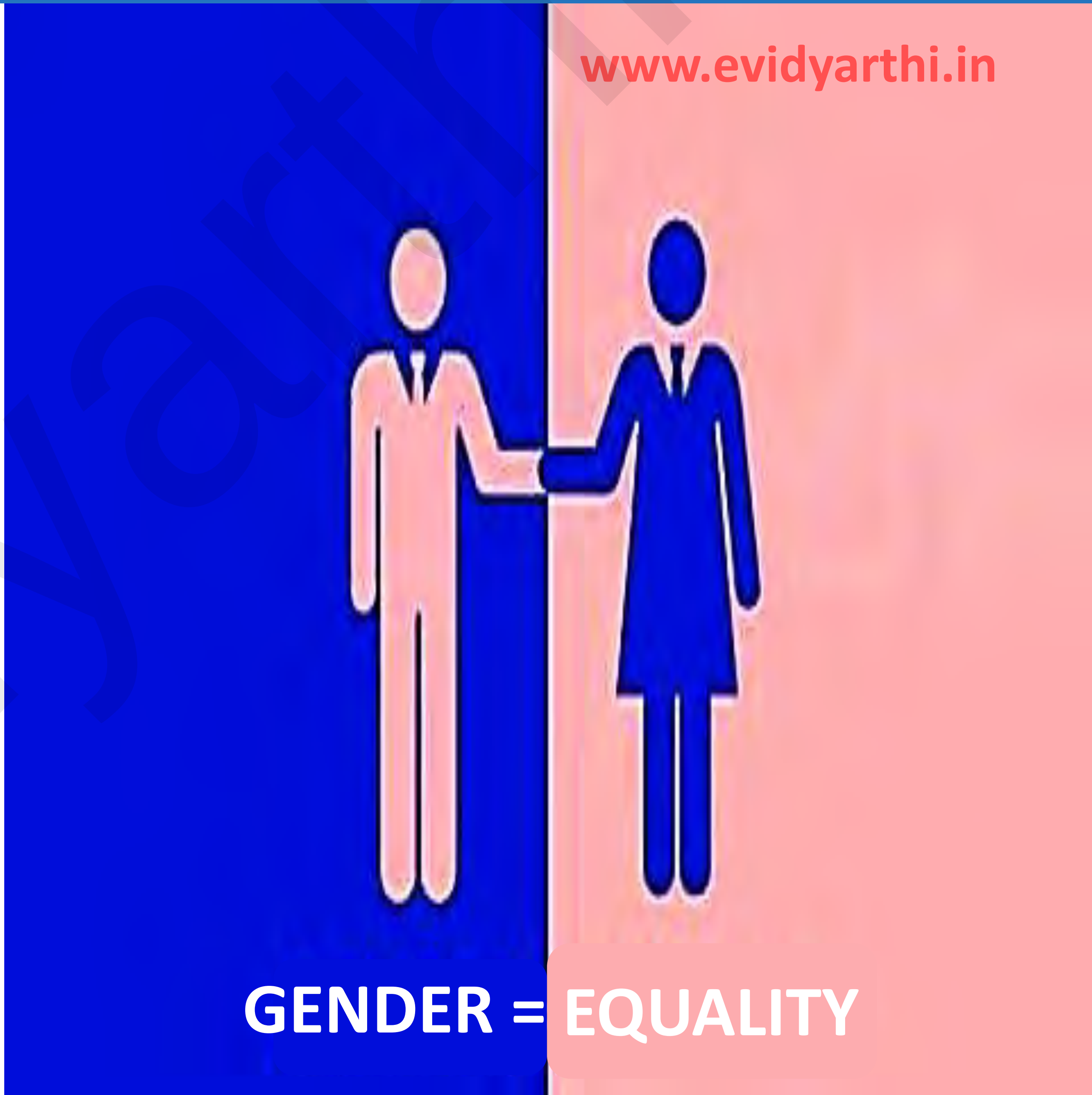

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

कि दोनों लिंगों के बीच असमानता अभी भी मौजूद है। इसलिए, सरकार स्थिति में सुधार के लिए कुछ सकारात्मक उपाय करने के लिए बहुत उत्सुक है।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in
https://www.evidyarthi.in/

कक्षा VII पाठ 4 लड़के और लड़कियों के रूप में बड़ा होना (NCERT)

क्रेच

www.evidyarthi.in

https://www.evidyarthi.in/

www.evidyarthi.in

महिलाओं का काम और समानता

- पुरुषों और महिलाओं के बीच असमानता को न केवल व्यक्ति या परिवार के स्तर पर बल्कि सरकार द्वारा भी कार्यों के माध्यम से निपटाया जाना चाहिए।

https://www.evidyarthi.in/

लिंग असमानता

www.evidyarthi.in

evidyarthi

www.evidyarthi.in

- संविधान कहता है कि पुरुष या महिला होना **भेदभाव** का कारण नहीं बनना चाहिए।
- इसलिए, सरकार इसके कारणों को समझने और **स्थिति** के समाधान के लिए **सकारात्मक कदम** उठाने के लिए **प्रतिबद्ध** है।

https://www.evidyarthi.in/

कक्षा VII पाठ 4 लड़के और लड़कियों के रूप में बड़ा होना (NCERT)

www.evidyarthi.in

evidyarthi

कक्षा VII पाठ 4 लड़के और लड़कियों के रूप में बड़ा होना (NCERT)

https://www.evidyarthi.in/